नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रेवड़ी कल्चर : सुप्रीम कोर्ट की चिंता का संज्ञान लें

मुफ्त सुविधाओं और चुनावी रेवड़ियों की राजनीति पर सर्वोच्च न्यायालय की हालिया टिप्पणी ने भारतीय लोकतंत्र के सामने खड़े एक गंभीर प्रश्न को फिर से केंद्र में ला दिया है. मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने जिस स्पष्टता और कठोरता के साथ राज्यों को आईना दिखाया है, वह केवल कानूनी टिप्पणी नहीं, बल्कि आर्थिक और नैतिक चेतावनी भी है. न्यायालय ने पूछा है कि क्या करदाताओं के धन का उपयोग अस्पताल, विद्यालय और सड़कों जैसे बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए नहीं होना चाहिए. जब अनेक राज्य राजस्व घाटे से जूझ रहे हैं, तब चुनाव के समय स्कूटी, कपड़े, मुफ्त बिजली और अन्य वस्तुएं बांटना किस प्रकार की वित्तीय समझदारी को दर्शाता है. यह प्रश्न केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास की दिशा से जुड़ा हुआ है.

लोकतंत्र में कल्याणकारी योजनाएं आवश्यक हैं. निर्धनों, वंचितों और कमजोर वर्गों को सहायता देना राज्य का दायित्व है. किंतु सहायता और तुष्टीकरण के बीच एक महीन रेखा होती है. जब बिना किसी अंतर के सक्षम और असक्षम सभी को समान रूप से मुफ्त सुविधाएं दी जाती हैं, तो यह सामाजिक न्याय नहीं, बल्कि वोट की राजनीति प्रतीत होती है. सर्वोच्च न्यायालय ने ठीक ही कहा कि जो लोग भुगतान करने में समर्थ हैं, उन्हें भी मुफ्त लाभ देना अंततः उन गरीब बच्चों के अधिकारों पर आघात है जिन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सस्ती चिकित्सा की आवश्यकता है.

सबसे गंभीर प्रश्न कार्य संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभाव का है. यदि नागरिकों को यह संदेश दिया जाए कि श्रम और उत्पादन के बिना भी जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं निरंतर मुफ्त मिलती रहेंगी, तो परिश्रम की प्रेरणा क्षीण हो सकती है. किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसकी कार्य संस्कृति, उद्यमिता और उत्पादकता पर निर्भर करती है. मुफ्त की आदत यदि मानसिकता बन जाए, तो यह आत्मनिर्भरता की भावना को कमजोर करती है. चुनाव से ठीक पहले की जाने वाली अचानक घोषणाएं भी लोकतांत्रिक नैतिकता पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं. जब दरें और बजट पूर्व निर्धारित होते हैं, तब अचानक खजाना खोल देना क्या जनहित का निर्णय है या मतदाताओं को प्रभावित करने का प्रयास. तमिलनाडु विद्युत वितरण निगम से जुड़े मामले में मुफ्त बिजली के कारण बढ़ते वित्तीय बोझ ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ऐसी नीतियों का भार अंततः सार्वजनिक उपक्रमों और करदाताओं पर ही पड़ता है.

राज्य सरकारों को यह समझना होगा कि अल्पकालिक लोकप्रियता और दीर्घकालिक विकास में से किसी एक का चयन करना पड़ता है. सुदृढ़ बुनियादी ढांचा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं और रोजगार सृजन ही स्थायी समृद्धि का मार्ग हैं. यदि संसाधन सीमित हैं, तो प्राथमिकताएं भी स्पष्ट होनी चाहिए. सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी को राजनीतिक हस्तक्षेप के रूप में नहीं, बल्कि वित्तीय अनुशासन और उत्तरदायित्व की पुकार के रूप में देखा जाना चाहिए. लोकतंत्र में मतदाता भी उतने ही उत्तरदायी हैं जितनी सरकारें. उन्हें यह विचार करना होगा कि क्या तात्कालिक लाभ दीर्घकालिक विकास की कीमत पर स्वीकार्य है.

समय आ गया है कि राजनीति लोकलुभावन वादों से ऊपर उठकर जवाबदेह शासन की ओर अग्रसर हो. कुल मिलाकर मुफ्त की संस्कृति से बाहर निकलकर परिश्रम, उत्पादकता और न्यायसंगत कल्याण की दिशा में कदम बढ़ाना ही राष्ट्रहित में है. जाहिर है सुप्रीम कोर्ट की इन टिप्पणियों और चिंता का राज्य और केंद्र सरकारों ने संज्ञान लेना चाहिए.

गलगोटिया प्रकरण ने देश को शर्मसार कर दिया

दिल्ली में जारी एआई समिट में हर तरफ 'गलगोटिया रोबो प्रकरण' की ही धूम है. समिट स्थल में इस प्राइवेट यूनिवर्सिटी की तकनीकी उपस्थिति खत्म कर दी गई, लेकिन समिट में मौजूद देशी-विदेशी डेलीगेट्स की जुबान में इसी की चर्चा है. 'गलगोटिया रोबो प्रकरण' ने हमारी नवाचार क्षमता को ही नहीं अपितु संस्कृति को भी शर्मसार कर दिया है. जिस मंच पर भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और रोबोटिक्स की वैश्विक शक्ति के रूप में प्रस्तुत होना था, वहीं इस घटना ने हमारी तैयारी, ईमानदारी और मौलिकता तीनों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए.

समिट खत्म होने के बाद, देश की छवि को धक्का पहुंचाने वाली गलगोटिया यूनिवर्सिटी के अपराध की कड़ी सजा तय की जानी चाहिए ताकि फिर कोई संस्थान जुगाड़ की धोखाधड़ी से देश को शर्मसार न कर सके. गलगोटिया से जुड़े रोबोट के प्रदर्शन से यह उम्मीद थी कि यह भारत की स्वदेशी क्षमता का उदाहरण होगा. लेकिन जब यह सामने आया कि चोरी की करतूत थी, सरेआम आंखों में धूल झोंकने की धोखाधड़ी थी. भारत आज एआई, सेमीकंडक्टर और रोबोटिक्स में वैश्विक निवेश आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है. ऐसे में इस तरह की घटनाएं विदेशी निवेशकों के मन में हमारे प्रति न केवल संदेह पैदा करती हैं, बल्कि भारतीय संस्थानों की विश्वसनीयता पर भी प्रश्न चिन्ह लगाती हैं. एक गंदी मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है. 'गलगोटिया रोबो' को एक अत्याधुनिक भारतीय एआई रोबोट के रूप में प्रदर्शित किया गया. लेकिन बाद में सामने आया कि उसके कई सॉफ्टवेयर और क्षमताएं मूल रूप से पहले से उपलब्ध विदेशी ओपन सोर्स प्लेटफॉर्म या अन्य डेवलपर्स के कोड पर आधारित थीं जिन्हें पर्याप्त श्रेय दिए बिना 'स्वदेशी नवाचार' के रूप में प्रस्तुत किया गया.

यहां दो महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हैं- पहला यह कि क्या यह वास्तविक नवाचार था या केवल मौजूदा तकनीक का पुनर्पैकेजिंग करके हम चालाकी से ऐसा साबित करना चाह रहे थे? दूसरा यह कि क्या हम दूसरों की मेधा को अपने जुगाड़ पैकेजिंग दुनिया के सामने छाती ठोंककर प्रस्तुत करने की जहालत कर रहे थे? भारत में कई स्टार्टअप्स ने विदेशी एप्स की हुबहू नकल करके उन्हें मौलिक 'भारतीय समाधान' के रूप में पेश किया है.

साल 2010-2020 के बीच भारत में लॉन्च हुए दर्जनों ई-कॉमर्स और सोशल मीडिया एप्स वास्तव में अमेरिकी या चीनी मॉडल की प्रतिलिपि थे. इनमें से अधिकांश इसीलिए टिक नहीं पाए क्योंकि उनमें मौलिकता का अभाव था. आज एआई, रोबोटिक्स और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में वैश्विक प्रतिस्पर्धा बहुत तेज है. अमेरिका, चीन और यूरोप अरबों डॉलर शोध में निवेश करके मौलिक तकनीक विकसित कर रहे हैं. ऐसे में यदि भारत केवल जुगाड़ पर निर्भर रहा, तो वह तकनीकी उपभोक्ता बना रहेगा, निर्माता नहीं. गलगोटिया रोबो प्रकरण केवल एक तकनीकी विवाद नहीं, बल्कि एक आईना है.

यह हमें दिखाता है कि क्या हम वास्तव में नवाचार करना चाहते हैं या केवल उसका दिखावा करना चाहते हैं? ऐसी फ्रॉड करने वाली यूनिवर्सिटी को नेताओं का संरक्षण और ग्रेंट में काफी मोटी रकम मिलती है. वह छात्रों से लाखों रुपये की फीस लेकर और भी अनापशनाप कमाई करती है.

-वीना गौतम

चीन के रोबोट डॉग को अपना बताया

'गलगोटिया रोबो प्रकरण' ने हमारी नवाचार क्षमता को ही नहीं अपितु संस्कृति को भी शर्मसार कर दिया है. जिस मंच पर भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और रोबोटिक्स की वैश्विक शक्ति के रूप में प्रस्तुत होना था, वहीं इस घटना ने हमारी तैयारी, ईमानदारी और मौलिकता तीनों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए. समिट खत्म होने के बाद, देश की छवि को धक्का पहुंचाने वाली गलगोटिया यूनिवर्सिटी के अपराध की कड़ी सजा तय की जानी चाहिए ताकि फिर कोई संस्थान जुगाड़ की धोखाधड़ी से देश को शर्मसार न कर सके.

मध्य क्षेत्र की डायरी

मध्यप्रदेश कांग्रेस को शिल्पकार की दरकार

दिलीप झा

मध्यप्रदेश कांग्रेस की राजनीति में भीषण उथल पुथल चल रहा है. गुटबाजी को संभालना किसी वरिष्ठ नेता के लिए मुश्किल ही नहीं कठिन है. कहा जाता है कि राजनीति में अक्सर सेहरा उनके सिर बंधता है जो अंत में कमान संभालते हैं, लेकिन जीत की असल इबारत वो लिखते हैं जो कठिन समय में संगठन की जमीन तैयार करते हैं. कांग्रेस सूत्र बताते हैं कि मध्य प्रदेश कांग्रेस के संदर्भ में यह विश्लेषण पूरी तरह सटीक है कि 2018 में जो कमलनाथ की सरकार बनी थी, वह वास्तव में अरुण यादव के साढ़े चार साल के अथक परिश्रम और संघर्ष का परिणाम थी. यह एक राजनीतिक तथ्य है कि जब कांग्रेस प्रदेश में हाशिए पर थी अर्थात सुखाड़ के हालात बने हुए थे तब अरुण यादव ने प्रदेश अध्यक्ष के रूप में संगठन की कमान संभाली. उन्होंने साढ़े चार साल तक पूरे प्रदेश के संपूर्ण जिलों (50+) की धूल छानी और ऐतिहासिक पदयात्राएं कीं. उन्हीं के कार्यकाल में कार्यकर्ता सड़कों पर उतरा और भाजपा के खिलाफ माहौल बना. 2018 की जीत उसी साढ़े चार साल की तपस्या का फल थी, जिसका लाभ पार्टी को मिला.

अरुण यादव के पास स्वर्गीय सुभाष यादव की वह विरासत है जिसने मध्य प्रदेश में 'सहकारिता आंदोलन' खड़ा किया. सहकारिता के माध्यम से उनका जुड़ाव केवल पिछड़ा वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्राह्मण, क्षत्रिय (ठाकुर), लोधी और खाती समाज सहित हर वर्ग के किसान परिवारों के साथ उनका सीधा और पारिवारिक रिश्ता है. राजनीति को करीब से समझने वालों का कहना है कि यह वह सामाजिक पूंजी है जो 2028 और 2029 में कांग्रेस की नैया पार लगा सकती है.

कांग्रेस के जमीन से जुड़े नेताओं का कहना है कि अरुण यादव का प्रभाव किसी एक क्षेत्र की भौगोलिक सीमाओं में कैद नहीं है. मालवा और निमाड़ से लेकर विंध्य क्षेत्र, बुंदेलखंड और ग्वालियर-चंबल (विशेषकर भिंड) तक, उनकी स्वीकार्यता एक 'मास लीडर' के रूप में है. वे सही मायनों में 'अखिल मध्य प्रदेश' के चेहरे हैं.

अगर हम 2018 और 2019 के चुनावों के सूक्ष्म विश्लेषण को देखें, तो यह स्पष्ट है कि कांग्रेस को सबसे अधिक लाभ उन्हीं वर्गों और क्षेत्रों से मिला जहां अरुण यादव का प्रभाव सक्रिय था. आगामी 2028 की विधानसभा और 2029 की लोकसभा की बड़ी लड़ाई जीतने के लिए कांग्रेस को उनके अनुभव, बेदाग छवि और सांगठनिक पकड़ की सख्त जरूरत है. भाजपा के 'यादव कार्ड' और उनकी 'सोशल इंजीनियरिंग' को ध्वस्त करने की क्षमता केवल अरुण में है.

दिग्विजय सिंह जैसे दिग्गज के बाद, राज्यसभा में एक ऐसे नेता की आवश्यकता है जो सदन में दहाड़ सके और जमीन पर कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ा सके. पूर्व केंद्रीय मंत्री और सांसद के रूप में अरुण यादव का अनुभव राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस को मजबूती देता है. मध्य प्रदेश की जनता और कांग्रेस पार्टी के लिए वर्तमान में उनसे श्रेष्ठ और कोई विकल्प नहीं है. वर्तमान में जरूरत इस बात की है कि लोकसभा में कांग्रेस के प्रतिपक्ष नेता राहुल गांधी मध्य प्रदेश की सामाजिक समरसता भाव रखने वाले नेताओं और कार्यकर्ताओं की पुकार को सुनें. कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ता बताते हैं कि अरुण यादव को राज्यसभा भेजना केवल एक नियुक्ति नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश में कांग्रेस की सत्ता में वापसी का 'शंखनाद' होगा. मध्य प्रदेश के कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पार्टी के भविष्य के लिए इससे अधिक उपयुक्त विकल्प और कोई नहीं है.

कांग्रेस संगठन का किला अंदर से खोखला

राजनीति के कुरुक्षेत्र में राहुल गांधी अकेले लड़ रहे हैं, क्योंकि उनके पीछे खड़ा संगठन का किला अंदर से खोखला हो चुका है. कांग्रेस कार्यालयों में राजनीतिक नियुक्तियों ने संगठन का बेड़ा गर्क कर दिया है. सिर्फ मेरा आदमी और तेरा आदमी अब वक्त आ गया है कि इन दफ्तरों से 'राजनीतिक चश्मे' वाले कर्मचारियों को बाहर किया जाए और प्रबंधन की कमान भारतीय सेना के सेवानिवृत्त अधिकारियों को सौंपी जाए. एक राजनैतिक कार्यकर्ता या नेता जब दफ्तर की जिम्मेदारी संभालता है, तो वह 'गुटबाजी' और 'पहुंच' देखता है. लेकिन एक रिटायर्ड फौजी केवल अनुशासन और समयबद्धता देखता है .आज कांग्रेस दफ्तर का हाल यह है कि कार्यकर्ता के पत्र की 4 साल तक पावती नहीं मिलती. देश का राष्ट्रपति भवन 50 पन्नों का जवाब एक महीने में दे देता है, लेकिन कांग्रेस का स्टाफ 'पाषाण युग' की नींद सो रहा है. इसलिए अगर पीसीसी में एक रिटायर्ड सैन्य अधिकारी बैठा होगा, तो वह सुनिश्चित करेगा कि हर कॉल का 'कॉल बैक' हो और हर पत्र का जवाब समय सीमा के भीतर मिले, जैसा कि भाजपा के गृहमंत्री के दफ्तर में होता है. आज की आधुनिक संचार नीति के दौर में भी कार्यकर्ताओं की उपेक्षा करना केवल लापरवाही नहीं, बल्कि 'भीतरघात' है.

इमरान के लिए आगे आए 14 पूर्व कप्तान

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान राजनीति में आने से पहले अपने देश के श्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ी रहे, जिनकी विश्व क्रिकेट में छाप थी. इसलिए दुनिया के 5 देशों के 14 पूर्व क्रिकेट कप्तानों ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को पत्र लिखकर इमरान खान को समुचित उपचार देने का अनुरोध किया है. इस पत्र पर सुनील गावस्कर, कपिल देव, ग्रेग चैपल, बेलिंडा क्लार्क, माइकल अथरटन, नासिर हुसैन, इयान चैपल, एलन बार्डर, माइकल ब्रियर्ली, डेविड गोवर, किम ह्यूजेस, क्लाइव लॉयड, स्टीव वॉ व जॉन राइट के हस्ताक्षर हैं. पूर्व भारतीय कप्तान अजहरुद्दीन ने भी क्रिकेटर से राजनेता बने पूर्व पाकिस्तान कप्तान इमरान खान के साथ गरिमापूर्ण व निष्पक्ष व्यवहार करने की अपील की और उनके स्वास्थ्य पर चिंता जताई. जेल में रहते हुए इमरान खान की दाहिनी आंख की लगभग 85 प्रतिशत दृष्टि कम हो गई है. मानवीय दृष्टिकोण रखते हुए विभिन्न देशों के 14 पूर्व क्रिकेट कप्तानों ने जो पत्र लिखा है, क्या उसका पाकिस्तान सरकार पर असर पड़ेगा? यह मामला अंतरराष्ट्रीय स्वरूप का बन गया है. भारत, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, वेस्ट इंडीज, न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेट कप्तानों में से प्रायः सभी इमरान खान की टीम के खिलाफ खेल चुके हैं. 1970 से 1990 के दशक में इमरान खान दूरदर्शी कप्तान होने के साथ ही परिपूर्ण ऑलराउंडर थे. 1992 में वर्ल्डकप जीतने वाली पाकिस्तानी टीम का उन्होंने नेतृत्व किया था. एक मैच में 5 विकेट लेने के साथ ही शतक बनाने का रिकार्ड उन्होंने कायम किया था. जैक कैलिस व कपिल देव के पहले ऑलराउंडर के रूप में इमरान की ही ख्याति थी. वह 2023 से जेल में कैद हैं. उन पर अनेक आरोप हैं. पाकिस्तान में कोई भी सरकार अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए पूर्व शासकों पर अनेक आरोप लगा देती है. यह कहना न्यायोचित नहीं होगा कि पूर्व भारतीय कप्तानों सुनील गावस्कर या कपिल देव ने इमरान के प्रति सहानुभूति जता कर राष्ट्रहित के विरुद्ध काम किया है. यह खेल जगत से जुड़ी हस्तियों का भावनात्मक लगाव है, जिसका राजनीति से संबंध नहीं है. किसी ने इमरान की रिहाई की मांग नहीं की, बल्कि अच्छे इलाज व देखभाल पर जोर दिया है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

बापू के देश में लॉरेंस बिश्नोई बॉलीवुड में आतंकित हर कोई

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बापू के देश में बिश्नोई की चर्चा है. रिश्ते में साले-बहनोई हुआ करते हैं तो गैंगस्टरों में लॉरेंस बिश्नोई का नाम मशहूर है. मुंबई की फिल्मी दुनिया उससे आतंकित है. महात्मा गांधी जब भी मौन व्रत करते थे, ब्रिटिश शासकों के हाथ-पैर फूल जाया करते थे. उस अवधि में उनके आश्रमवासी सहमे रहते थे कि न जाने आगे चलकर यह मौन कितना विस्फोटक होगा. अब बापू के मौन की परंपरा बिश्नोई निभा रहा है. उसकी खामोशी किसी की मौत की घंटी बजाने वाली समझी जाती है.'

हमने कहा, 'चाहे पंजाबी सिंगर सिध्दू मूसावाला की हत्या हो या एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी का मर्डर, हर घटना से पहले लॉरेंस बिश्नोई ने 9 दिन का मौन व्रत रखा था. मौन के दौरान वह धार्मिक पुस्तकें पढ़ता है, खाना नहीं खाता और ध्यान लगाता है. मौन व्रत के मेडीटेशन में वह सबसे इशारों में बात करता है. उसकी वजह से 'टाइगर जिंदा है' का हीरो सलमान खान भी परेशान रहता है. रोहित शेट्टी के घर पर भी बिश्नोई गैंग ने गोलीबारी करवाई.'

पड़ोसी ने कहा, 'यह बात समझ लीजिए कि बिश्नोई समाज काले हिरन या ब्लैक बक को अपना भगवान मानता है. लगभग 27 साल पहले फिल्म 'हम साथ-साथ हैं' की शूटिंग के दौरान उसके कलाकार शिकार खेलने गए थे. काले हिरन के शिकार के बाद से सलमान खान न केवल जोधपुर की अदालत में मामले-मुकदमे में फंसा बल्कि लॉरेंस बिश्नोई के निशाने पर भी आ गया. विधायक बाबा सिद्दीकी को इसलिए मारा गया क्योंकि वह सलमान खान का करीबी था. लॉरेंस का डर सलमान का पीछा नहीं छोड़ रहा है, क्योंकि जेल में रहकर भी लॉरेंस बेहद खतरनाक है. कहते हैं कि उसके पास 700 शूटर हैं. उसके इशारे पर उसके गैंग के लोग एक्टिव हो जाते हैं. लोग यह भी मानते हैं कि वह मौन धारण कर अपनी शक्ति जागृत करता है. लॉरेंस का सारा काम इनडायरेक्ट हो जाता है. उसका सिर्फ संकेत ही काफी है. लॉरेंस के मौन से सुरक्षा एजेंसियों के कान खड़े हो जाते हैं. वैसे सच तो यह है कि ईश्वर की मर्जी के बगैर पत्ता भी नहीं हिलता. भयभीत होने की बजाय रोहित शेट्टी और सलमान को मानना चाहिए कि डर के आगे जीत है!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12177 - डॉ. सागर खादीवाला

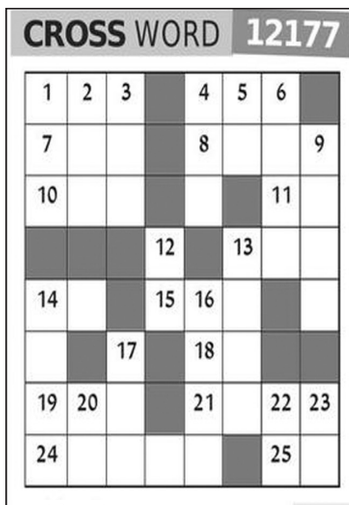

जहर 3. लीन होना, विहार करना, अनुरक्त होना 4. आक 5. नगीना, अदद 6. गायब, लुप्त, खाली, गैरमौजूद (उर्दू) 9. लाली, सुर्खी, एक प्रकार का धान 12 अधीन, वशवर्ती, आज्ञाकारी 13. गड़बड, संदिग्ध 14. राजनीति (उर्दू) 16. सूर्य, दिनकर 17. आदर, साहित्य (उर्दू) 20. पुरुष, मर्द, मनुष्य 22. पितामह, बड़ा भाई 23. कण, दाना, कोणाकार टुकड़े

बाएं से दाएं
1. जो, यदि (उर्दू) 4. सोचना, अनुमान 6. हद दरजे का, अंतिम 8. कलंकित, दागवाला (उर्दू) 10. सुंदर स्त्री, कामिनी 11. लीन, लिप्त 13. नील या कोयले से किसी अंग पर बना चिन्ह, चुभाना, टैटू 14. बदला, इनाम (उर्दू) 15. उदास, खिन्न (उर्दू) 18. स्त्री, मनोहारिणी स्त्री 19. प्रमाण-पत्र प्रामाणिक कथन (उर्दू) 21. कल से ढला हुआ सिक्का 24. अधिक भीगा हुआ 25. गर्वोक्ति, हक, न्याय हेतु न्यायालय में दिया गया प्रार्थना पत्र

ऊपर से नीचे
1. स्थिर, गतिहीन, अटल 2. विष,

Solution 12176

आ	द	म	■	भा	र	ती	य
शु	■	न	गा	ड़ा	■	■	■
तो	प	ची	■	■	इ	न्ना	न
ष	■	ता	ना	बा	ना	■	के
■	ला	■	टा	ल	म	टो	ल
बे	ग	म	■	स	■	क	■
का	त	ना	■	खा	स	■	जी
री	■	ही	ना	■	ई	शा	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में चिन्ताओं से छुटकारा मिलेगा. राज्य, सम्मान की प्राप्ति होगी. गृहकार्यों में व्यस्तता रहेगी. धन लाभ का योग है. मन में प्रसन्नता रहेगी. वर्ष के मध्य में यात्रा का योग है. व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा. रोजगार में सफलता मिलेगी. भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा. वर्ष के अन्त में व्यवहार कुशलता बढेगी. मित्र के कारण कार्यो में व्यवधान आयेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों से राजनैतिक लाभ होगा. घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी. धन लाभ का योग है. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा. रोजगार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में ऊहापोह की स्थिति निर्मित होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को साहसिक पराक्रम में वृद्धि होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वास्थ्य, सुन्दर, हष्टपुष्ट और मधुरभाषी, परिश्रमी, चतुर होगा, बुद्धिमान, व्यवसायिक दृष्टिकोण वाला होगा, सबको लोकप्रिय होगा, 8 वर्ष की आयु तक तकलीफ उठायेगा, बाद में अच्छा रहेगा, विद्या के क्षेत्र में रूचि रहेगी, खेलकूद के प्रति विशेष आकर्षित रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

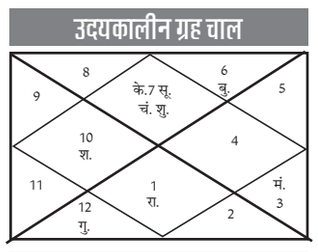

पंचांग

रा.मि. 02 संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी शनिवासरे दिन 1/30, रेवती नक्षत्रे रात 7/45, शुभ योगे शाम 4/41, विष्टि करणे सू.उ. 6/21, सू.अ. 5/39, चन्द्रचार मीन रात 7/45 से मेष, पर्व- वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 12,2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां, लालमिर्च, अजवाईन, जाबित्री के भाव में तेजी होगी, चांदी, रूई, सरसों, सूरजमुखी के भाव में मंदी होगी, बाजार का रूख देखकर व्यापार करें. भाग्यांक 4110 है.

मेष- समय के अनुसार तौर तरीकों में बदलाव लाभकारी रहेगा, मनोरंजक यात्रा की योजना बनेगी, संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी, व्यवसनों से दूर रहें.

वृषभ- घरेलू मामले सुलझाने में सफलता मिलेगी, मेलजोल लाभकारी रहेगा, किसी पारिवारिक समारोह में भाग लेना होगा, माता पिता का सहयोग रहेगा.

मिथुन- विवादास्पद मामले सुलझेगें, कोई मूल्यवान वस्तु खोने का डर है, अतः अपने सामान की सुरक्षा व्यवस्था स्वयं करें, संतान की चिन्ता दूर होगी.

कर्क- ऐसा कोई कार्य बनेगा, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति दृष्टिकोण और समृद्धि में वृद्धि होगी, दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा, अधिक जल्दबाजी न करें.

सिंह- आर्थिक एवं व्यवसायिक दिशा में किया गया प्रयास सार्थक होगा, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त होने का योग है.

कन्या- मित्रों का समागम होगा, यथेष्ठ सहयोग मिलेगा, मानसिक रूप से आप स्वस्थ्य रहेगें, नवीन कार्यों की योजना पर विचार विमर्श होगा.

तुला- किसी रिश्तेदार या पड़ौसी से विवाद होगा, मांगलिक कार्यों के प्रति उत्साह बना रहेगा, विरोधी वर्ग पराजित होगा, शुभ सूचना मिलेगी.

वृश्चिक- भूमि भवन के क्रय-विक्रय से लाभ होगा, मातृपक्ष से शुभ समाचार मिलेगा, स्वास्थ्य संबंधी शिथिलता रहेगी, कार्यो में व्यस्तता रहेगी.

धनु- यात्रा में सावधानी रखें, व्यर्थ की परेशानी और तनाव से बचें, जीवनसाथी का सहयोग रहेगा, युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे.

मकर- ले देकर काम करने की योजना सफल होगी, अधिकारियों के सहयोग से आर्थिक लाभ होगा, धन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी, मनोरंजक स्थल की सैर होगी.

कुम्भ- वैचारिक गतिरोध दूर होगा, कारोबारी यात्रा सफल रहेगी, मन प्रसन्न रहेगा, मामा पक्ष से लाभ होगा, पारिवारिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मीन- आकस्मिक लाभ के अवसर मिलेंगे, रूखे व्यवहार से परिचित नाराज हो सकते हैं, यात्रा में उठाईगीरों से सावधानी रखें, पूज्य व्यक्ति की चिन्ता रहेगी.

SUDOKU 7309

				1			6	
					5			
2		3	9			8		
6							5	
			8		3			
	1							4
		7			1	3		9
			2					
	5			6				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7308

7	6	8	2	1	9	3	4	5
2	1	5	6	3	4	8	7	9
3	4	9	5	7	8	6	1	2
5	7	4	8	6	1	9	2	3
9	2	1	3	4	5	7	8	6
8	3	6	7	9	2	1	5	4
1	5	3	4	8	5	2	9	7
4	9	7	1	2	3	5	6	8
6	8	2	9	5	7	4	3	1